6. अजंता (डॉ.भगवतशरण उपाध्याय)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भगवतशरण उपाध्याय का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– भगवतशरण उपाध्याय का जन्म सन् 1910 ई. में बलिया जिले के उजियारपुर नामक ग्राम में हुआ था।

2. भगवतशरण ने एम.ए. कहाँ से किया?

उ०– भगवतशरण ने एम.ए. काशी हिंदू विश्वविद्यालय से किया।

3. भगवतशरण ने प्राध्यापक पद पर कार्य कहाँ किया था?

उ०– भगवतशरण ने प्राध्यापक पद पर कार्य 'बिड़ला महाविद्यालय' पिलानी में किया।

4. भगवतशरण ने साहित्य पर व्याख्यान कहाँ-कहाँ दिए?

उ०– भगवतशरण ने यूरोप, अमेरिका, चीन आदि देशों में साहित्य पर व्याख्यान दिए।

5. भगवतशरण के आलोचनात्मक ग्रंथों के नाम बताइए।

उ०– भगवतशरण के आलोचनात्मक ग्रंथ– विश्व-साहित्य की रूपरेखा, साहित्य और कला, इतिहास के पन्नों पर, विश्व को एशिया की देन, मंदिर और भवन आदि हैं।

6. उपाध्याय जी की भाषा-शैली की विवेचना कीजिए।

उ०– उपाध्याय जी ने अपनी रचनाओं में शुद्ध, परिष्कृत और परिमार्जित साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया था। इन्होंने प्राचीन भाषाओं के साथ-साथ आधुनिक यूरोपीय भाषाओं का भी गहन अध्ययन किया था। इन्होंने अपनी रचनाओं में लोकोक्तियों, मुहावरों एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग किया। उपाध्याय जी ने अपनी रचनाओं में विषय के अनुसार शैलियों का प्रयोग किया। जिनमें विवेचनात्मक, वर्णनात्मक, भावात्मक शैली प्रमुख थी।

7. उपाध्याय जी की ऐसी दो रचनाओं के नाम बताइए, जिनमें भावात्मक शैली का प्रयोग किया गया हो।

उ०– उपाध्याय जी की 'मंदिर और भवन', 'ठूँठा आम' ऐसी दो रचनाएँ हैं जिनमें भावात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

8. भगवतशरण जी की मृत्यु कब हुई थी?

उ०– भगवतशरण जी की मृत्यु सन् 1982 ई. में देहरादून में हुई थी।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. डॉ. भगवतशरण उपाध्याय का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– डॉ. भगवतशरण उपाध्याय पुरातत्व कला के पंडित, भारतीय संस्कृति और इतिहास के सुप्रसिद्ध विद्वान एवं प्रचारक तथा लेखक थे। उपाध्याय जी को अनेक भाषाओं का ज्ञान था। संस्कृत और हिंदी भाषा के साथ-साथ उपाध्याय जी का अंग्रेजी भाषा पर भी पूर्ण अधिकार था। इसी कारण हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में इन्होंने सौ से भी अधिक कृतियों की रचना की है। अंग्रेजी में लिखी हुई इनकी पुस्तकें विदेशों में बड़ी रुचि के साथ पढ़ी जाती हैं।

जीवन परिचय व कार्यक्षेत्र– भगवतशरण उपाध्याय जी का जन्म सन् 1910 ई. में बलिया जिले के उजियापुर नामक ग्राम में हुआ था। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में ही प्राप्त की। संस्कृत विषय में इनकी बचपन से ही अत्यधिक रुचि थी। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात उपाध्याय जी काशी आ गए और यहीं पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय में प्रवेश लेकर प्राचीन इतिहास विषय में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। इसके पश्चात ये 'बिड़ला महाविद्यालय' पिलानी में प्राध्यापक पद पर कार्यरत रहे। उपाध्याय जी पुरातत्व विभाग, लखनऊ संग्रहालय तथा प्रयाग संग्रहालय में भी अध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे। इसके उपरांत ये 'प्राचीन इतिहास विभाग' उज्जैन में अध्यक्ष व प्रोफेसर रहे। उपाध्याय जी ने अनेक बार यूरोप, अमेरिका, चीन आदि देशों की यात्राएँ की और वहाँ पर भारतीय संस्कृति और साहित्य पर महत्वपूर्ण भाषण दिए। इन्हें भारतीय संस्कृति से अत्यधिक प्रेम था किंतु ये रूढ़िवादिता एवं परंपरावादिता में विश्वास नहीं रखते थे। उपाध्याय जी मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त पद पर भी कार्यरत रहे और वहाँ से अवकाश ग्रहण कर ये देहरादून आकर वहीं निवास करने लगे तथा देहरादून में ही अगस्त 1982 ई. में इनकी मृत्यु हो गई।

कृतियाँ– डॉ० भगवतशरण उपाध्याय जी ने मौलिक एवं स्वतंत्र विचारक के रूप में सम्मान प्राप्त किया तथा साहित्य, कला, संस्कृति आदि विभिन्न विषयों पर सौ से भी अधिक पुस्तकों की रचना की। पुरातत्व, आलोचना, संस्मरण एवं रेखाचित्र तथा यात्रा-साहित्य आदि विषयों पर उपाध्याय जी ने प्रचुर साहित्य की रचना की है। विवेचना एवं तुलना करने की विलक्षण योग्यता के आधार पर इन्होंने भारतीय साहित्य, कला एवं संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं को संपूर्ण विश्व के सामने स्पष्ट कर दिया। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

(अ) आलोचनात्मक ग्रंथ– विश्व-साहित्य की रूपरेखा, साहित्य और कला, इतिहास के पन्नों पर, विश्व को एशिया की देन, मंदिर और भवन

(ब) यात्रा-साहित्य– कलकत्ता से पीकिंग

(स) अन्य ग्रंथ– ठूँठा आम, सागर की लहरों पर, कुछ फीचर, कुछ एकांकी, इतिहास साक्षी है, इंडिया इन कालिदास

2. उपाध्याय जी की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– भाषा-शैली– पुरातत्व एवं प्राचीन भाषाओं के साथ-साथ उपाध्याय जी ने आधुनिक यूरोपीय भाषाओं का भी गहन

अध्ययन किया। इन्होंने अपनी रचनाओं में शुद्ध,परिष्कृत और परिमार्जित साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया है।
इनकी रचनाओं में प्रत्येक स्थान पर भाषा में प्रवाह और बोधगम्यता के साथ-साथ गंभीर चिंतन और विवेचना की गहराई भी प्रमाणित होती है। अपनी रचनाओं में कई स्थानों पर लोकोक्तियों, मुहावरों एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग कर उन्होंने भाषा को सरस, सरल एवं व्यावहारिक रूप प्रदान किया है।
उपाध्याय जी ने अपनी रचनाओं में विषय के अनुसार भिन्न-भिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। ये एक सशक्त शैलीकार, समर्थ आलोचक और पुरातत्व के आचार्य के रूप में विख्यात हैं। इनकी रचनाओं में मुख्यत: निम्नलिखित शैलियों के दर्शन होते हैं—

विवेचनात्मक शैली– उपाध्याय जी ने अपने ग्रंथों एवं निबंधों में विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया है। 'साहित्य और कला', 'विश्व-साहित्य की रूपरेखा' आदि ग्रंथों में विवेचनात्मक शैली का मुख्य रूप से प्रयोग किया गया है। इस शैली में उपाध्याय जी की सूक्ष्म विवेचनात्मक प्रतिभा के दर्शन होते हैं।

वर्णनात्मक शैली– उपाध्याय जी ने यात्राओं पर आधारित साहित्य का सजीव वर्णन करने के लिए वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। विभिन्न स्थलों एवं गतिमान दृश्यों के वर्णन में इस शैली की प्रधानता प्रकट होती है। इनकी वर्णनात्मक शैली की उत्कृष्ट सजीवता का कारण इसका वर्णनात्मक होने के साथ-साथ भावात्मक होना भी है। अपने यात्रा-संस्मरणों का सजीव चित्रण इन्होंने इसी शैली के माध्यम से किया है।

भावात्मक शैली– उपाध्याय जी ने भारतीय संस्कृति को अपनी सभी रचनाओं में सर्वोच्च कोटि की संस्कृति के रूप में दर्शाया है और इसके लिए उन्होंने भावात्मक शैली का प्रयोग किया है। 'मंदिर और भवन', 'ठूँठा आम', 'सागर की लहरों पर' आदि रचनाओं में भावात्मक शैली को प्रधानता दी गई है।

3. 'अजंता' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'अजंता' भगवतशरण उपाध्याय जी का पुरातत्व संबंधी लेख है, जिसमें लेखक ने अजंता की गुफाओं की चित्रकारी और शिल्प के इतिहास एवं सौंदर्य का ही वर्णन नहीं किया है, वरन् दर्शक के मन पर पड़ने वाले उनके प्रभाव को भी अपनी मनोरम शैली में साकार कर दिया है।
अपने जीवन को मृत्यु के चंगुल से मुक्त करके उसे अमर बना देने की कामना मनुष्य अनादिकाल से करता चला आ रहा है। अपनी खूबियों को भावी पीढ़ी को बताने के लिए उसने अनेक उपाय सोचे और उन्हें मूर्त रूप प्रदान किया। मनुष्य ने चट्टानों और पर्वतों पर ऐसे उपाय छोड़े जो आज हमारी अमानत-विरासत बन गए हैं। मनुष्य ने इनमें से एक उपाय पर्वतों को काटकर मंदिरों के निर्माण का किया और उनकी दीवारों पर चित्र बनाए।
भारत में लगभग सवा दो हजार साल पहले पहाड़ काटकर मंदिर बनाने की प्रथा चल पड़ी थी। अजंता की गुफाएँ भी उसी का एक प्रारूप है। जैसे-एलोरा व एलीफेंटा की गुफाएँ। अजंता की गुफाएँ सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। चीन और लंका में भी यहाँ के चित्रों की नकल की गई है। वाघ और सित्तनवसल की गुफाओं में भी अजंता की गुफाओं की भाँति दीवारों पर प्रेम व दया की दुनिया ही बसा दी गई है।
अजंता की गुफाओं को देखकर ऐसी अनुभूति होती है कि पत्थरों को काटकर मूर्ति बनाने वाले कलाकारों ने इन गुफाओं में चारों तरफ सौंदर्य की वर्षा कर दी हो। बंबई प्रांत में बंबई (आधुनिक मुंबई) और हैदराबाद के बीच विंध्याचल की श्रेणियाँ पूर्व से पश्चिम में फैली हैं। यहीं नीचे से पर्वतों की शृंखला उत्तर से दक्षिण तक फैली हुई है, जिसे सह्याद्रि की पहाड़ियाँ कहते हैं, यहीं पर अजंता की गुफाएँ स्थित हैं। अजंता गाँव से थोड़ी दूर पर ही बाधुर नदी बहती है जो पहाड़ों के पैरों में साँप के समान प्रतीत होती है। इस स्थान पर पर्वत सीधी रेखा छोड़कर अर्द्धचंद्राकार से हो गए हैं। यहाँ की अद्भुत सौंदर्य हमारे पूर्वजों को इतना प्रिय लगा कि उन्होंने इसे खोदकर यहाँ महल व भवनों को बना दिया। उन्होंने पहाड़ काटकर उसे खोखला किया और सुंदर भवन बनाए, जहाँ के खंभों पर उकेरी गई मूर्तियाँ हँस उठी हैं। उन्होंने दीवारों व छतों पर चित्रों की एक दुनिया ही बसा दी। इनकी दीवारों पर मानो साक्षात् जीवन बरस गया है, जैसे किसी ने अजायबघर के भंडार को खोल दिया हो। यहाँ बंदरों, हाथियों, हिरनों की कहानी, दया व क्रूरता की कहानी, उकेरी गई हैं। जहाँ एक तरफ पाप को दर्शाया गया है वहीं दूसरी तरफ प्रेम का स्रोत भी प्रवाहित है। राजा और भिखारी, भोगी और योगी, नर-नारी आदि सभी कलाकारों के द्वारा चित्रित किए गए हैं। यहाँ बुद्ध के जन्म से लेकर उनके निर्वाण तक की घटनाएँ ऐसी चित्रित की गई हैं कि आँखें उन्हीं पर अटक जाती हैं।

एक तरफ हाथ में कमल लिए बुद्ध हैं, तो दूसरी तरफ कमलनाल लिए यशोधरा त्रिभंग अवस्था में खड़ी हैं। दूसरा दृश्य बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण का है जब बुद्ध यशोधरा व राहुल को सोते हुए छोड़कर चले गए थे। एक दृश्य में यशोधरा बालक राहुल के साथ है, बुद्ध भिक्षुक के रूप में आते हैं और भिक्षापात्र देहली पर रख देते हैं और यशोधरा अपने एकमात्र लाल राहुल को बुद्ध को दे डालती है।

एक तरफ बंदरों का चित्र है। दूसरी तरफ सरोवर में क्रीड़ा करता हुआ हाथी कमलदंड तोड़कर हथिनियों को दे रहा है। एक तरफ राजा व मंत्री मदिरापान करते हुए चित्रित हैं तो दूसरी ओर क्षुब्ध रानी आत्महत्या करके अपने प्राण त्यागते हुए चित्रित है। अजंता में बुद्ध के इस जन्म के अतिरिक्त पिछले जन्मों की कथाएँ भी चित्रित हैं, जिन्हें जातक कहते हैं। इनकी संख्या 555 है। जो बौद्धों में बहुत लोकप्रिय है।

इन गुफाओं का निर्माण ईसा से करीब दो हजार साल पहले शुरु हुआ और ये सातवीं सदी तक तैयार हुईं। कुछ गुफाओं में यहाँ पर दो हजार साल पुराने चित्र सुरक्षित हैं। परंतु अधिकतर चित्र गुप्तकाल व चालुक्य काल के मध्य निर्मित हुए। अजंता के चित्रों का संसार की चित्रकलाओं में विशेष स्थान है। यहाँ के चित्रों ने देश-विदेशों की चित्रकला को प्रभावित किया, जिसका प्रभाव पूर्व के देशों पर तो पड़ा ही मध्य-पश्चिमी एशिया भी इससे लाभान्वित हुआ।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. जिंदगी को मौत के ..... विरासत बन गई है।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्यखंड' के 'भगवतशरण उपाध्याय' द्वारा रचित 'अजंता' नामक पुरातत्व लेख से उद्धृत है।

प्रसंग– लेखक उपाध्याय जी ने अजंता की गुफाओं के निर्माण का कारण बताते हुए कहा है कि मनुष्य अपने जीवन को भयमुक्त करके उसे अमर बना देने का प्रयास करता रहा है। जिससे वह अपनी भावी पीढ़ियों को अपनी विशेषता की कहानी बता सकें।

व्याख्या– अपने जीवन को मृत्यु के चंगुल से स्वतंत्र करके उसे अमर बना देने की कामना मनुष्य अनादिकाल से करता चला आ रहा है। वह केवल कामना ही करता नहीं आ रहा है, वरन् इसके लिए निरंतर अथक प्रयास भी करता रहा है। वह अपने शरीर को तो अमर न बना सका, किंतु अपने जीवन के अविस्मरणीय पलों को अमर बनाने में अवश्य सफल रहा है। इसके लिए उसने पर्वत की गुफाओं को काटकर अपने जीवन के उन पलों को उनमें उकेरकर उन्हें सदैव के लिए अमर कर दिया। इसके अतिरिक्त भी मनुष्य ने अपनी विशेषताओं की कहानी से सदियों बाद आने वाली पीढ़ियों का परिचय कराने के लिए अनेक उपाय सोचे और उनको मूर्त रूप भी प्रदान किया। इन्हीं उपायों के रूप में उसने बड़ी-बड़ी कठोर चट्टानों पर अपने संदेश खोदे, ताड़ों के समान ऊँचे और धातुओं के जैसे चिकने पत्थरों के खंभे उसने यहाँ-वहाँ खड़े किए, ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अत्यधिक सुंदर अक्षरों में अपने उपदेश और संदेश लिखकर उन्हें अनेक स्थानों पर स्थापित किया। इस प्रकार इन उपायों के माध्यम से मानव के जीवन-मरण की कहानी अनादिकाल से आज सदियों बाद भी उसी रूप में हमारे सामने प्रकट होती चली आ रही है। मानव की यह कहानी और उसके उद्घाटन के ये सभी उपकरण अथवा साधन आज हमारी अमूल्य धरोहर बन गए हैं। हमें इस पर गर्व भी है और अपने गौरव का अभिमान भी।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक क नाम लिखिए।

उ०– पाठ– अजंता **लेखक–** भगवतशरण उपाध्याय

(ब) आदमी ने पहाड़ क्यों काटा है?

उ०– आदमी ने जिंदगी को मौत के पंजे से मुक्त कर उसे अमर बनाने के लिए पहाड़ काटा।

(स) आज हमारी विरासत कौन-सी वस्तु बन गई है?

उ०– सदियों पहले आदमी द्वारा चट्टानों पर खोदे गए संदेश, ताड़ों से ऊंचे और धातुओं से चिकने खड़े किए गए चिकने पत्थर के खंभे, ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अक्षरों के बिखेरे गए मोती आज हमारी विरासत बन गए हैं।

(द) अजंता की गुफाओं के निर्माण का क्या उद्देश्य रहा है?

उ०– मनुष्य की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाकर उसका ज्ञान सदियों बाद आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के उद्देश्य से अजंता की गुफाओं का निर्माण किया गया।

2. वाघ और सित्तनवसल ..... जंजीर को सनाथ करते हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– लेखक ने यहाँ वाघ और सित्तनवसल की गुफाओं का वर्णन करके उन्हें अजंता की गुफाओं के समकक्ष बताया है और इन गुफाओं की सुंदरता का अनुपम वर्णन किया हैं।

व्याख्या– लेखक कहते हैं कि वाघ और सित्तनवसल की गुफाएँ भी अजंता की गुफाओं के समकक्ष की परंपरा की हैं, जिनमें कलाकारों ने प्रेम व दया के सभी रंग भर दिए हैं। अजंता की गुफाओं को देखकर ऐसा लगता है जैसे पत्थर को सजीव बनाने वाले कलाकारों ने यहाँ सौन्दर्य की वर्षा कर दी हो। पत्थर को तराशने वाले कलाकारों ने अपनी छेनी और हथौड़ी से पत्थर में प्राण फूँक दिए हैं, पत्थरों को सजीव बना दिया है। चित्रकारों ने अपनी तूलिका के रंगों से सारी पीड़ा और दया के भाव को साकार करने वाले चित्र अंकित कर दिए हैं। मानव की कला यहाँ सजीव हो उठी है। इस सजीव कला में प्रकृति ने अपना भरपूर योग दिया है, जिससे अजंता के दृश्य बहुत ही मनोरम प्रतीत होते हैं। यहाँ ऐसा लगता है कि जैसे प्रकृति उल्लसित हो नृत्य कर रही हो। बंबई और हैदराबाद के मध्य विंध्याचल की श्रेणियाँ पूर्व से पश्चिम की ओर फैली हुई हैं। यहीं नीचे से पर्वतों की एक श्रृंखला उत्तर से दक्षिण की ओर भी फैली हुई है, जो सह्याद्रि की पहाड़ियों के नाम से जानी जाती है। सह्याद्रि की श्रृंखला में ही अजंता की गुफाएँ स्थित हैं। इन्हीं गुफाओं में विश्वविख्यात अजंता के सुंदर मंदिर हैं। पर्वत की सूनी-सूनी श्रेणियों के मध्य अजंता की ये गुफाएँ इतनी सुंदर प्रतीत होती हैं, मानो यह पर्वत-श्रृंखला इन गुफाओं में मंदिरों को पाकर सनाथ हो गई हैं। इन गुफाओं का यह सौभाग्य है कि यहाँ इतने सुंदर सुंदर मंदिर बने हैं, जो अपने सौंदर्य से सबका मन मोह लेते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपयुर्क्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– अजंता **लेखक–** भगवतशरण उपाध्याय

(ब) कौन-सी गुफाएँ अजंता की परंपरा में हैं, जिनकी दीवारों पर प्रेम और दया की दुनिया सिरज गई है?

उ०– वाघ और सित्तनवसल की गुफाएँ अजंता की परंपरा में हैं, जिनकी दीवारों पर प्रेम और दया की दुनिया सिरज गई है।

(स) अजंता की मूर्तिकला की विशेषता गद्यांश के आधार पर बताइए।

उ०– अजंता की मूर्तिकला अत्यंत जीवंत है। मूर्तिकारों ने उन मूर्तियों में एक-एक रेखा को इस प्रकार उकेरा है, उनमें इस प्रकार रंगों का प्रयोग किया गया है कि दु:ख, दर्द और दया के भाव उनमे उजागर हो गए हैं। मूर्तियों के आकार और उभार भी अत्यधिक सुंदर हैं।

(द) सह्याद्रि किसे कहते हैं?

उ०– बंबई प्रदेश में बंबई और हैदराबाद के मध्य में विंध्याचल की पूर्व-पश्चिम की ओर जाती हुई पर्वत श्रेणियों के नीचे से एक श्रृंखला उत्तर से दक्षिण की ओर जाती है। इस पर्वत श्रृंखला को ही सह्याद्रि कहते हैं।

(य) अजंता की गुफाएँ कहाँ स्थित है?

उ०– अजंता की गुफाएँ बंबई और हैदराबाद के बीच स्थित सह्याद्रि पर्वत श्रृंखला में स्थित है।

3. पहले पहाड़ काटकर ..... पहाड़ पुलकित हो उठे।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– उपाध्याय जी ने यहाँ पर अजंता की गुफाओं के निर्माण के विषय में बताया है कि कलाकारों ने उन्हें कैसे मूर्त रूप दिया।

व्याख्या– लेखक कहते हैं कि अजंता की गुफाओं के निर्माण के लिए पहले पहाड़ों को काटा गया फिर उन्हें खोखला किया गया, फिर उनमें इतने सुंदर भवनों का निर्माण किया गया कि उन भवनों के खंभों पर जो मूर्ति बनाई गई थी, वह भी हँसती हुई प्रतीत होती हैं। भवनों के अंदर की सारी दीवारों और छतों को रगड़-रगड़कर अत्यधिक चिकना बना दिया गया। तत्पश्चात् उस चिकनी पृष्ठभूमि पर चित्रकारों के द्वारा अनेकानेक चित्र बना दिए गए, जिनको देखकर ऐसा लगता है कि चित्रों की एक नई दुनिया ही निर्मित कर दी गई हो। लेखक कहते हैं कि गुफा की भीतरी दीवारों व छतों पर चित्रकारों के द्वारा पलस्तर लगाकर विभिन्न चित्रों को बाहरी रेखाओं के द्वारा प्रदर्शित किया गया और उसके बाद उनके शिष्यों ने उन चित्रों को रँगकर ऐसा बना दिया कि वे सजीव लगने लगे। इन सजीव चित्रों के द्वारा दीवारें उल्लसित हो गईं और पहाड़ गद्‌गद् हो उठे।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– अजंता **लेखक–** भगवतशरण उपाध्याय

(ब) पहाड़ के अंदर चित्र कैसे बनाए गए हैं?

उ०– पहाड़ों को काटकर व खोखला करके उनमें भवन बनाकर उनकी दीवारों पर चित्र बनाए गए हैं।

(स) सुंदर भवन का निर्माण किस प्रकार किया गया है?

उ०– पहाड़ों को काटकर व खोखला करके उनमें सुंदर भवनों का निर्माण किया गया है।

(द) भवन की भीतर की दीवारों पर क्या किया गया?

उ०– भवन की भीतर की दीवारों को रगड़-रगड़कर चिकना करके उन पर चित्रों की एक नई दुनिया निर्मित कर दी गई।

4. यह हाथ में कमल ..... बुद्ध को दे डालती है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने अजंता की गुफाओं में कलाकारों द्वारा चित्रित किए गए गौतम बुद्ध के जीवन से संबंधित चित्रों का सुंदर वर्णन किया है।

व्याख्या– लेखक कहता है कि हाथ में कमल लिए बुद्ध खड़े हैं। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे उनका रूप सौंदर्य छलककर सर्वत्र बिखर रहा हो और उनके उभरे हुए आकर्षक नेत्रों से चारों ओर प्रकाश विस्तीर्ण हो रहा हो। यशोधरा भी वैसे ही कमल-नाल को लिए त्रिभंग में खड़ी है। यह चित्र अत्यंत संजीव प्रतीत होता है। लेखक ने एक अन्य चित्र की कलात्मकता का वर्णन करते हुए कहा है कि बुद्ध महाभिनिष्क्रमण पर जाते हुए दिखाई दे रहे हैं। यशोधरा एवं राहुल निद्रा में निमग्न हैं। बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण का यह चित्र ऐसा सजीव है, मानो बुद्ध पत्नी एवं पुत्र को त्यागकर जाते समय अपने हृदय की भावनाओं पर नियंत्रण प्राप्त कर रहे हैं।

लेखक भगवान बुद्ध के गृह त्याग के पश्चात, भिक्षा माँगने के एक चित्र का वर्णन करते हुए कहते हैं कि एक चित्र में गौतम बुद्ध के साथ उनका भाई नंद है, जिसे उसकी पत्नी सुंदरी ने गौतम बुद्ध के पास भिक्षा के लिए वापस लौटा लाने के लिए भेजा था। सुंदरी ने भिक्षा माँगने आए बुद्ध को बिना भिक्षा दिए द्वार से ही वापस लौटा दिया था। लेकिन नंद बुद्ध को वापस तो नहीं लौटा पाता वरन् उनके उपदेशों से प्रभावित होकर स्वयं भिक्षु बन जाता है। जहाँ से वह भागने की भी कोशिश करता है परंतु बार-बार पकड़कर संघ में लौटा लिया जाता है। लेखक ने दूसरे दृश्य का भी वर्णन किया है, जिसमें यशोधरा अपने पुत्र राहुल के साथ है। जहाँ बुद्ध यशोधरा के पास आए हैं, परंतु पति के रुप में नहीं भिक्षुक के रूप में और अपना भिक्षा का पात्र दरवाजे की देहली पर रख देते हैं। तब यशोधरा की विचित्र मनोस्थिति का वर्णन किया गया है कि उसका पति भिखारी के रूप में उसके पास आया है, पर वह सोचती है कि वह उसे क्या दे, उसके पास तो बुद्ध को देने के लिए कुछ भी नहीं है। उसके जीवन का सौंदर्य व उसके जीवन का बहुमूल्य रत्न सिद्धार्थ तो खो ही गया है। संसार की सभी बहुमूल्य वस्तु तो उस संसार के कल्याणकर्ता के लिए मिट्टी के समान हैं। परंतु अचानक वह अपने जीवन की एकमात्र आशा अपने लाल (पुत्र) राहुल को बुद्ध को भिक्षा के रूप में दे देती है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– अजंता **लेखक–** भगवतशरण उपाध्याय

(ब) अजंता की गुफा में बनाए गए बुद्ध व यशोधरा के चित्रों की स्थिति को बताइए।

उ०– बुद्ध कमल को हाथ में लिए खड़े हैं तथा यशोधरा कमल-नाल धारण किए त्रिभंग अवस्था में खड़ी है।

(स) महाभिनिष्क्रमण का क्या अर्थ है?

उ०– संसार से वैराग्य होने पर शांति की खोज जैसे महान उद्देश्य के लिए गौतम बुद्ध द्वारा अपनी पत्नी, पुत्र, परिवार और राज्य को त्यागकर निष्क्रमण कर जाने की क्रिया को महाभिनिष्क्रमण कहते हैं।

(द) यशोधरा बुद्ध को कुछ भी देने में संकोच क्यों कर रही थी?

उ०– यशोधरा इसलिए संकोच कर रही थी क्योंकि उसके पास बुद्ध को देने के लिए कुछ भी नहीं है और संसार की बहुमूल्य वस्तुएं तो बुद्ध के लिए मिट्टी के समान हैं।

(य) प्रस्तुत गद्यांश का सारांश लिखिए।

उ०– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने बुद्ध के विभिन्न दृश्यों का वर्णन किया है जो अजंता की गुफाओं की दीवारों पर अलंकृत है, जिनमें बुद्ध को कमल व यशोधरा को कमल-नाल पकड़े दर्शाया गया है। दूसरे दृश्य में बुद्ध को अपने भाई के साथ दिखाया गया है जो बुद्ध को वापस लौटाने के लिए जाता है परंतु स्वयं भी वापस नहीं लौटता। एक अन्य दृश्य में यशोधरा को राहुल के साथ दिखाया गया है जब बुद्ध यशोधरा के पास भिक्षुक बनकर भिक्षा लेने आती है तथा यशोधरा अपने पुत्र राहुल को उन्हें भिक्षा के रूप में दे देती है।

5. और उधर वह बंदरों ..... बौद्धों में बड़ा मान है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने अजंता की गुफाओं पर चित्रकारों द्वारा उकेरे गए विभिन्न चित्रों का वर्णन किया हैं जिनमें बुद्ध के पिछले जन्मों की कथाएँ भी सम्मिलित हैं।

व्याख्या– अजंता की गुफा में उसकी दीवारों पर लयबद्ध चित्रकारी की गई हैं, उन चित्रों में विविधता, सजीवता और गतिशीलता सर्वत्र दिखाई देती है। उसमें यदि एक ओर बंदरों के चित्र हैं तो लगता है कि वे चित्र नहीं हैं, बल्कि जीवित बंदर ही वहाँ बैठे हैं। उनमें स्वाभाविकता और गतिशीलता इतनी है कि मानो वे अभी उछल पड़ेंगे। उधर जलाशय में जल क्रीड़ा करता हाथी कमल-नाल से कमल को तोड़कर अपने आस-पास की हथिनियों को दे रहा है। यह चित्र भी इतना स्वाभाविक और गतिमान है कि वह दृश्य आँखों के सामने साकार हो जाता है। वहीं गुफा के एक चित्र में राजमहल में राजा और मंत्रिगण मदिरापान कर रहे हैं तो उसी चित्र में दूसरी ओर रानी उस मदिरापान से क्षुब्ध होकर आत्महत्या करके अपना जीवन समाप्त कर रही है। बस, उसके प्राण निकलने ही वाले हैं। इस प्रकार हमारे आम जीवन में खाना-खिलाने, कहीं बसने अथवा किसी को बसाने, नाचने-गाने आदि मनोरंजन, कहने-सुनने के साधारण से आपसी विवाद, वन-नगर ऊँच नीच के भेदभाव और धनी-निर्धन के जीवन से संबंधित जितने दृश्य हो सकते हैं, उन सभी का स्वाभाविक तथा सजीव चित्रण अंजता के गुफा-चित्रों में हुआ है। आज कोई भी व्यक्ति उन चित्रों को जाकर देख सकता है। अजंता की गुफाओं में गौतम बुद्ध के वर्तमान जीवन की घटनाएँ तो चित्रित हैं ही वहाँ उनके पूर्व के जन्मों की कथाएँ भी चित्रित हैं, पिछले जन्मों की इन कथाओं को 'जातक' के नाम से पुकारा जाता है, जिनकी संख्या 555 है और इनका संग्रह भी 'जातक' के नाम से प्रसिद्ध है जिसे बौद्ध धर्म के अनुयायी सम्मान की दुष्टि से देखते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– अजंता **लेखक–** भगवतशरण उपाध्याय

(ब) किसके चित्र को सजीव व गतिमान बताया गया है?

उ०– बंदरों के चित्र को सजीव व गतिमान बताया गया है।

(स) 'महलों में प्यालों के दौर चल रहे हैं, उधर वह रानी अपनी जीवन-यात्रा समाप्त कर रही है।' कथन का आशय लिखिए।

उ०– इस कथन का तात्पर्य है कि अजंता की दीवारों पर अलंकृत दृश्यों में एक ओर राजा व मंत्रीगण मदिरापान कर रहे हैं तथा दूसरी ओर मदिरापान से दु:खी रानी आत्महत्या करके अपनी जीवन की यात्रा को समाप्त कर रही है।

(द) जातक कथा किसे कहते हैं? इनकी संख्या भी बताइए।

उ०– गौतम बुद्ध पूर्व (पहले) के जन्मों की कथाओं को जातक कथा कहते हैं। ये संख्या में 555 हैं।

6. इन पिछले जन्मों में ..... संभालने लग जाते हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस गद्यांश में लेखक ने बुद्ध के पिछले जन्मों की योनियों का उल्लेख किया है और पशुओं के व्यवहार के बारे में बताया है।

व्याख्या– लेखक कहते हैं कि बुद्ध के अनेक योनियों में जन्म लेने की कथा 'जातक' नामक ग्रंथ में वर्णित है। इन जन्मों में बुद्ध ने हाथी, बंदर, हिरन आदि पशुओं के रूप में विभिन्न योनियों में पृथ्वी पर जन्म लिया और संसार के कल्याण हेतु दया व त्याग का उदाहरण प्रस्तुत किया। जिसमें वे स्वयं बलिदान हो गए थे। उस समय विद्यमान अन्य जानवरों ने भी ऐसा

व्यवहार किया था, जो कि मनुष्य के लिए उचित हो। उन सभी ने किस प्रकार औचित्य अथवा उपयुक्तता का निर्वाह किया था यह सब कुछ अजंता के चित्रों में भली-भाँति चित्रित किया गया है। इन दृश्यों के चित्रांकन के समय कलाकारों ने अपने ज्ञान को विस्तार से प्रकट कर दिया है। जिसके कारण गाँव व नगरों, महलों व झोपड़ियों, समुद्रों व पनघटों का एक संसार ही अजंता के पहाड़ों के जंगल में बस गया है। यहाँ की चित्रकारी इतनी अद्‌भुत सुंदरता के साथ बनाई गई है कि देखते ही बनता है। हाथियों के समूह के रूप में, घोड़े आदि दूसरे जानवर भी ऐसे लगते हैं जैसे किसी जादूगर द्वारा अपना काम समझाने के बाद वे सभी पशु अपने कार्य का निर्वाह कर रहे हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– अजंता **लेखक–** भगवतशरण उपाध्याय

(ब) पिछले जन्म में बुद्ध ने किन-किन योनियों में जन्म लिया था?

उ०– पिछले जन्म में बुद्ध ने हाथी, बंदर, हिरन आदि के रूप में विविध योनियों में जन्म लिया था।

(स) चितेरों ने अपनी जानकारी की गाँठ किस प्रकार खोल दी है?

उ०– चितेरों ने दृश्यों को असाधारण खूबी से दर्शाने के लिए अपनी जानकारी की गाँठ खोल दी है।

(द) अजंता के पहाड़ी जंगल में किनका संसार उतर पड़ा है?

उ०– अजंता के पहाड़ी जंगल में नगरों और गाँवों, महलों और झोपड़ियों, समुद्रों और पनघटों का संसार उतर पड़ा है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उपाध्याय जी ने निम्न में से कौन-से विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया?

(अ) सिंचाई विभाग (ब) बिजली विभाग

(स) शिक्षा विभाग (द) **पुरातत्व विभाग**

2. निम्न में से भगवतशरण उपाध्याय की रचना कौन-सी है?

(अ) उर्वशी (ब) कामायनी

(स) **सागर की लहरों पर** (द) सरोज-स्मृति

3. भगवतशरण की शिक्षा कहाँ तक हुई?

(अ) इंटरमीडिएट (ब) बी.ए.

(स) **एम.ए.** (द) बी.एड.

4. 'अजंता' पाठ किससे संबंधित लेख है?

(अ) **पुरातत्व संबंधी** (ब) प्रागैतिहासिक

(स) ऐतिहासिक (द) राजनैतिक

(ङ) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. निम्नलिखित शब्दों के तद्‌भव रूप लिखिए–

तत्सम	**तद्‌भव**
प्राचीन	पुराना
अभिराम	खूबसूरत
प्रेम	प्यार
कलावंत	कलाबाज
गुहा	गुफा
अर्द्धचंद्राकार	आधे चाँद वाला
विहँस	खुश
भिक्षु	भिखारी
निर्वाण	छुटकारा, मौन
अद्वितीय	अनोखा

2. निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग कीजिए–

शब्द	प्रत्यय
अमानत	त
अभिराम	आम
विरासत	त
पहाड़ी	ई
इंसानियत	इयत
विलासी	ई
बलिदान	दान

3. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग बताइए–

शब्द	उपसर्ग
विदेश	वि
अभिराम	अभि
अद्वितीय	अ
सनाथ	स
विहँस	वि
बेरहमी	बे

4. निम्नलिखित सामासिक पदों में विग्रह करते हुए समास का नाम बताइए–

समस्त पदस	मास-विग्रह	समास का नाम
जीवन-मरण	जीवन और मरण	द्वंद्व समास
कमलनाल	कमल की नाल	संबंध तत्पुरुष समास
भिक्षापात्र	भिक्षा का पात्र	संबंध तत्पुरुष समास
जगत्राता	जग को तारने वाला	बहुब्रीहि समास
जीवन-यात्रा	जीवन की यात्रा	संबंध तत्पुरुष समास
नर-नारी	नर और नारी	द्वंद्व समास

(च) पाठ्येतर सक्रियता